कालेज की पढ़ाई के लिए पिलानी जाने से पूर्व उनकी प्रिय ममेरी बहन रमा खूब रोई।

जीजी रोओ मत, मैं फिर आउंगा।....

महाविद्यालय में दीनदयाल जी के पढ़ने का समय रात्रि के 10 बजे से प्रातः 4 बजे तक रहता था। दिनभर वे अन्य विद्यार्थियों की पढ़ाई में मदद करते थे। दीनदयाल जी के कमरे में अन्य सहपाठी सो रहे हैं।

यहां कोने में लालटेन जलाकर पढ़ना उचित है किसी की नींद खराब नहीं होगी।

मुझसे मदद मांगने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। क्यों न एक एसोसिएशन बना लूं। हां। और उसका नाम रखूंगा 'जीरो एसोसिएशन'।'